शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

Online ISSN-3048-9296
Vol.-1; issue-2 (July-Dec.) 2024
Page No- 121-126

©2024 Shodhaamrit (Online)
www.shodhaamrit.gyanvividha.com

1. सोनू कुमार

शोधार्थी, हिंदी विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेदकर बिहार, विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर.

2. डॉ. त्रिविक्रम नारायण सिंह

शोध निर्देशक, स्नात्तकोत्तर हिंदी विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर.

Corresponding Author :
सोनू कुमार

शोधार्थी, हिंदी विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेदकर बिहार, विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर.

जानकीवल्लभ शास्त्री के गीतों में बिम्ब योजना

जानकीवल्लभ शास्त्री संस्कृत साहित्य के पुरोधा और उत्तर छायावाद के प्रख्यात एवं श्रेष्ठ रचनाकार हैं। वे एक साथ जातीय परंपरा के आधुनिक कवि, गद्य लेखक एवं आलोचक हैं। साथ ही वे जीवन, दर्शन और कला, सौन्दर्य के समर्थ साधक एवं विशिष्ट गीतकार हैं। हिन्दी साहित्यकाश में उन्होंने कालिदास से लेकर रवींद्रनाथ टैगोर तक, निराला से लेकर नागार्जुन तक की भावधारा को आगे बढ़ाया है। वे एक ओर प्रसाद के समान दार्शनिक हैं, तो दूसरी ओर कालिदास और जयदेव के समान क्लासिक भी।

आचार्य शास्त्री बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी रचनाकार हैं। उनका रचना संसार विस्तृत एवं व्यापक है। उनमें भौतिकता, आध्यात्मिकता, मानवतावाद, मनोविश्लेषण सबका समन्वित गुण विद्यमान हैं। उनके गीतों में भावों और विचारों का उफनता हुआ समुद्र है, जिसकी गहराई कलात्मकता का श्रेष्ठ प्रतिमान गढ़ता है। साथ ही उनके सूक्ष्म सौंदर्य की प्राणवायु, जीवन सौंदर्य को ही विभिन्न शब्दचित्रों के द्वारा मूर्त रुप प्रदान कर देती है।

मानवीय संवेदना दो प्रकार की होती है – अमूर्त संवेदना और संश्लिष्ट संवेदना। उन्हें प्रायः सीधे-सीधे व्यक्त नहीं किया जा सकता, उन अमूर्त और संश्लिष्ट संवेदनाओं को व्यक्त करने के लिए कवि को बिम्ब का सहारा लेना पड़ता है। रिचर्ड चेंच की भाषा में 'बिम्ब शब्द निर्मित चित्र है।' अर्थात् जिन संवेदनाओं को सीधे - सीधे व्यक्त नहीं किया जा सकता, उनके लिए रचनाकार बिंबो का प्रयोग करते हैं।

वस्तुतः बिम्ब किसी काव्य के लिए उतना ही महत्वपूर्ण होता है, जितना एक पुष्प के लिए रंग और गंध। बिम्ब और प्रतीक ही किसी काव्य को कथन की सपाटता से बचा लेते हैं। बिम्ब के प्रयोग में जिस रचनाकार की संवेदनशीलता जितनी अधिक तीव्र होती है, अध्ययन जितना गंभीर होता है, उनकी बिम्बधर्मिता उतनी ही सम्मोहक, व्यंजक एवं महत्वपूर्ण होती है। शास्त्री जी शास्त्रीय परंपरा के अध्येयता, ज्ञाता एवं युग स्रष्टा रचनाकार हैं। प्रो. डॉ. रेवती रमण लिखते हैं –"शास्त्री जी को जब हम भारतीय परंपरा से अभिन्न देखने का आग्रह करते हैं, तो प्रकारांतर से कालिदास और रविंद्र नाथ टैगोर की परंपरा में ही देखने का आग्रह करते हैं।"[1] कवि कुलगुरु कालिदास विक्रम की सभा के राज कवि थे और शास्त्री जी भी रायगढ़ के राज कवि रह चुके हैं। ये कालिदास को अपना आत्म बिम्ब मानते हैं। 'शिप्रा' में वे लिखते हैं –

"मेरे मेघ, दूत बन जाओ कालिदास के देश
कहना ' श्रुति मति सरस्वती' का इतना संदेश
प्यारे, तुम नंदन वन में बस भूल गए निज लोक !
जहां मिलन छन में विरहातूर होते काकी -कोक।"[2]

कवि का मन महाकवि कालिदास की दुनिया में विचरण करता है। लगता है, कालिदास के यक्ष को, जैसे रामगिरी से अलकापुरी तक का रास्ता ज्ञात था, वैसे ही शास्त्री जी को कालिदास के देश का पता ज्ञात है। यहाँ रूपक के धरातल पर, वे दृश्य और स्मृति का ऐसा शब्द चित्र खड़ा करते हैं, जैसे कण्व ऋषि का आश्रम हमारे सामने खड़ा हो। पाठक वर्ग को यह समझने में देर नहीं लगती है कि राजश्रय सुख को छोड़कर आया कवि स्वयं कण्व ऋषि हैं और उसका निराला निकेतन उसकी तपस्थली। वे नागार्जुन के कालिदास और यक्ष को भी समेटते हुए प्रतीत होते हैं। इन पंक्तियों में सुमधुर और ललित शब्दावली के चयन और दृश्य एवं स्मृति बिम्बों के मेल से अद्भुत संगीत की उत्पत्ति होती है तथा पाठक वर्ग को जयदेव के 'गीत गोविंद' जैसी तृप्ति महसूस होती है। वे निराला को अपना कवि गुरु मानते हैं। अपनी कविता पुस्तक 'रुप अरुप' को महाप्राण निराला के चरणों में ही समर्पित करते हैं। उन्होंने 'महाकवि निराला' शीर्षक से आलोचनात्मक पुस्तक की रचना भी की है। निराला और शास्त्री जी में काफी साम्य है। "दुख ही जीवन की कथा रही/ क्या कहूं आज जो नहीं कही"[3] की वेदना से लक्षित होता है कि निराला ने हिंदी के उत्थान हेतु अपना संपूर्ण जीवन खपा दिया और शास्त्री जी ने हिंदी साहित्य के भंडार को समृद्ध करने हेतु अपनी पूरी जिंदगी लगा दी। निराला छायावादी है और शास्त्री जी उत्तर छायावादी। "उत्तर छायावाद ने कला गीत को अलंकृत, संगीत को सुगम संगीत में रुपांतरित कर दिया। यह उनकी उपलब्धि है तो सीमा भी।"[4] हिंदी साहित्य में आचार्य शास्त्री का आगमन चौथे दशक में ही हुआ था। वे छायावाद के काफी समीप थे। आचार्य नलिन विलोचन शर्मा ने शास्त्री जी को छायावाद के पाँचवें कवि के रुप में स्वीकार कर लिया है। उनकी काव्यात्मक योजना भी निराला के काफी समीप दिखती है। प्रकृति वर्णन का सम्यक प्रयोग, अछूते व अनूठे बिम्बधर्मिता के साथ दोनों कवियों ने खूब किया है। निराला लिखते हैं -

"झूम - झूम मृदु गरज - गरज घनघोर
राग ! अमर अंबर में भर निज रोर !
झर - झर - झर निर्झर गिरि - सर में,
घर मरु तरु - मर्मर सागर में
सरित - त्वरित - गति - चकित पवन में।"[5]

वहीं शास्त्री जी लिखते हैं –

"घनन - घनन वह प्रलय प्रभंजन,
तड़ित - तड़िग, धक - धक नभ का मन ;
बम - बम - बम भैरव घन नर्तन
छंद बंद हो नति विनती के।"[6]

यहाँ दोनों कवियों की पंक्तियों में 'आर्ट ऑफ रीडिंग' है। कवि ने ध्वनि आवर्त में तेज वर्षा के दृश्य को श्रवण और चाक्षुष बिंबो की संश्लिष्ट एवं गतिशील प्रस्तुति द्वारा सामाजिक विसंगतियों एवं न्याय के मठाधीशों का वास्तविक यथार्थ सामने रख दिया है। यह वर्णन अनोखा एवं अविस्मरणीय है, जो उनेक समकालीनों में ज्यादा नहीं दिखता है। इन

दोनों कवियों के गीतों में उनका व्यक्तित्व बजता है। निराला की तुलना में शास्त्री जी के शब्दों का चयन ललित एवं मधुर है। वे निराला की अपेक्षा गीतात्मकता के अधिक समीप हैं। संभव है, उनकी यह विशेषता उनके संस्कृत ज्ञान के कारण हो। शास्त्री जी जितने बड़े कवि हैं, उतने ही समर्थ गीतकार हैं। कविता और गीत में पार्थक्य कम और साम्यता अधिक है। कविता में अर्थतत्त्व प्रबल होता है और गीत में लय तत्वों का प्रभाव अधिक रहता है। लेकिन वह कविता श्रेष्ठ हो जाती है, जिसमें अर्थगर्भत्व के साथ-साथ लय तत्त्व समाहित हो जाता है। इस प्रकार वह गीतकार महत्वपूर्ण हो जाता है, जिसमें लय तत्त्व के साथ - साथ अर्थ तत्त्व प्रबल हो जाता है। इस कसौटी पर शास्त्री जी महत्वपूर्ण और स्मरणीय गीतकार हैं। उनके गीतों में बिम्बों का गुणात्मक प्रयोग हुआ प्रतीत होता है। उनके गीतों में प्रयुक्त बिम्ब सटीक, व्यंजक, प्रभावशाली एवं कलात्मक हैं। उनके काव्य में प्रायः हर तरह के बिम्ब विद्यमान हैं - यथा समस्त ज्ञानेंद्रिय से संबद्ध बिम्ब।

चाक्षुष बिम्ब - चाक्षुष बिंबो का सीधा संबंध नेत्र से है। मनुष्य का जीवन विविधताओं से भरा हुआ है। उसका साक्षात्कार कवि को रमणीय व्यक्तियों, वस्तुओं एवं मनभावन दृश्य से होता है, तो कुरुप एवं कुत्सित रुप - रंगों से भी। शास्त्री जी मनभावन चेतना के विशिष्ट गीतकार हैं। उनकी तरल एवं सम्मोहक परक संवेदनाएं, प्रकृति के विविध चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त हुई हैं, जिसमें तरुणाई है, उमंग है, चंचल चेष्टाएं हैं। यथा -

"मेरी शिथिल मंद गति ही नहीं
गिरि वन सिंधु धार भी देखो।"[7]

कवि की चेतना यहां उर्ध्वमुखी प्रतीत होती है। भौतिक समृद्धि को अपने लक्ष्य पथ में नहीं बाँधता है। कवि यह बताना चाहता है कि साधना यदि सच्ची हो, तो एक नहीं तीनों लोक चाक्षुष दृष्टि में समाहृत हो सकते हैं। यहां कवि की अनुभूति अत्यंत तीव्र एवं चेतना व्यापक है। कवि मतिमन्दों को सृष्टि के प्रसार से साक्षात्कार कराता है। यह दृश्य बिम्ब का अनूठा उदाहरण है। चाक्षुष बिम्बों के अनेक प्रकार के उदाहरण शास्त्री जी के गीतों में प्रयुक्त हुए हैं –

रूप बिम्ब - शास्त्री जी रुपंकर कलाओं के मर्मज्ञ हैं। उनका रूप विधान सुसंगत एवं आकर्षक है। यथा– " देखना हो यह अनमोल देखो

मूंदकर आंखें मुंदा दिल खोल देखो।
झूमती झुकती थिरकती काँपटी - सी !
पवन बहती प्रति चरण कुछ भाँपति - सी !
मुग्ध लतिकाएं, कुसुम परिपूर्ण अंचल
और अपने आप अंचल आज चंचल।"[8]

उपमा और मानवीकरण के धरातल पर कवि प्रकृति में अनुभव की गहराई और उसकी व्यापकता को देखने की बात करता है। उनकी साधना अत्यंत तपी हुई है। वे कहते हैं कि खुली निगाहों से सब कुछ नहीं देखा जा सकता। इसके लिए भौतिक आंखों को बंद कर आत्मारुपी आँखों को जगाने की आवश्यकता है। तभी जाकर मानव से लेकर मानवेत्तर प्राणी तक का कल्याण होगा और हम रहस्य को जान पाएंगे। यहाँ गत्वर बिम्ब के साथ रुप बिम्ब का अद्वितीय प्रयोग है।

रंग बिम्ब - शास्त्री जी प्रसाद के समान ही रंगों के चितेरा कवि हैं। इनके गीतों में एक साथ अनेक रंगों के सौंदर्य का मनलुभावन मेल दिखता है -

"पीपल की डाली झुक आरी, मैं टूक झूला झूलूंगी !
देवराज गजराज गगन से, बंजर उर्वर सींच रहा,
वृंद बको का पंख फहाफह होले - होले फींच रहा
टँकी बुंदकिया वीर बहू री मखमल - सी यह कोमल घास
अरे भैया, तू कदम वन फूल, पात से भर आकाश।"[9]

कवि को रमणीय दृश्य अति पसंद है। वह बंजरता को उर्वरता से सींचकरए प्रकृति संग लोक - कल्याण की भावना को उजागर करता है। इसके लिए उन्होंने यहाँ पीपल के द्वारा हरे रंग का अद्वितीय बिंबात्मक चित्रण किया है। वह हमारी बुद्धि, तेज एवं उर्वरता को जागृत चेतना से साक्षात्कार करा देता है। गजराज के माध्यम से श्यामवर्ण, गगन द्वारा नील, वक द्वारा उजाला,

कोमल घास द्वारा हरा, कदम द्वारा घनघोर हरा एवं पीत रंगों की समन्वित चित्रकला दृष्टिगोचर होती है।

श्रावणिक बिम्ब - श्रावणिक बिम्ब का संबंध श्रवण से होता है। इसमें नाद - गुण की प्रधानता होती है। ऐसे बिम्ब पहले नाद गुण को ग्रहण करता है, फिर मनसा ग्राह्य होकर गीतकार की संवेदना को आम जन तक संप्रेषित करता है। उदाहरणार्थ –

"ताल - ताल पर उच्छल – उच्छल
कुलकुल - कुलकुल, कलकल - कलकल
प्रति - पदगति नति शत तरंग की
तरित भंगिमा अंग - अंग की।"[10]

इन पंक्तियों में कवि का विस्तृत जीवन दर्शन समाहित है। कवि का मानना है कि जनजीवन के कोहाहल से थक कर मनुष्य जब हार जाता है, परेशान हो जाता है, तब कवि की वाणी कोयल के समान ताल - ताल पर उच्छल-उच्छल कर उसमें ताजगी भर देती है। वह नई चेतना को पाकर फिर से हर्षोल्लास से भर जाता है तथा अपने कर्म पथ पर गतिशील हो जाता है। यहां कवि ने ताल – ताल, उच्छल-उच्छल, कुलकुल, कलकल जैसे शब्दों में श्रवण बिम्ब की सांगीतिकता से सम्मोहन पैदा किया है।

स्पर्श बिम्ब - स्पर्श बिम्ब का संबंध स्पर्शजन्य अनुभूतियों से है। शास्त्री की बहुविध मर्मस्पर्शी गीतकार हैं। उनके गीतों का मर्म सिर्फ हृदय को स्पर्श ही नहीं करता, वह हृदय को छू जाता है। वे लिखते हैं –

"जहाँ गुलजार गुलशन, क्या अजब सब फूल तेरे हैं
लगे पर जो गले तेरे, सुमन वे और होते हैं।" [11]

यह उनके गीतों का दुर्लभ द्रष्टा भाव है। कविता आत्मा की कला है। कवि यहाँ प्रकृति, दर्शन, अध्यात्म सबको एक साथ समेट लेता है। इन पंक्तियों में उनका अलग जीवन परिचय छिपा हुआ है। जीवन परिचय से अलग ज्ञान, मार्ग प्रशस्त करने में सहायक नहीं होते हैं। इन पंक्तियों में जीवन परिचय एवं ज्ञान को प्रकाशित करने में उन्होंने ' गले लगने' शब्द के माध्यम से अनोखा स्पर्श बिम्ब का सहारा लिया है।

आस्वाद बिम्ब - इसका संबंध रसास्वाद से है। शास्त्री जी अपने सरस जीवन अनुभूतियों को आस्वाद बनाकर, पाठकों के समक्ष मधुर एवं ललित शब्दचित्रों के द्वारा व्यक्त करते हैं –

"इस जीवन में जो मधुर अम्ल
जो कटु - कषाय लोना खारा।"[12]

यहां कवि ने अपनी जिंदगी में भोगे हुए यथार्थ को बड़ी बारीकी से आस्वाद्य बिम्ब के माध्यम से मूर्त रुप प्रदान किया है। साथ ही लक्ष्य संधान में वह, जो कुछ अनुभव करता है,उसे एक अलग ही अंदाज में व्यक्त करने का सफल, सार्थक प्रयास किया है –

"धूप दुपहर की मुखसर - सी थी,
रात भर मैंने चांदनी पी थी,
मौत बेमौत मर गई होती
मैंने ही उसको जिंदगी दी थी।" [13]

इन पंक्तियों के द्वारा कवि ने किसी विचार पद्धति या राजनीति का अनुसरण नहीं किया है। कर्तव्य पथ पर मिलने वाली बाधाओं को पार कर सफलता का मार्ग प्रशस्त करने की बात कहता है तथा एक खास अंदाज में आस्वाद्य बिम्ब हेतु शब्दचित्र का निर्माण करता है।

घ्राण बिम्ब - घ्राण बिम्ब का अस्तित्व अत्यंत सूक्ष्म अनुभवगम्य समझा जाता है। उनके काव्य रचना की अनेक प्रसंगों में जिस प्रकार के घ्राण बिम्ब का चित्र आया है, उससे अप्रतिम सुगंध का बोध होता है। शास्त्री जी के गीतों में इन बिंबो का सटीक, सार्थक एवं बहुव्यंजक प्रयोग हुआ है –

"वनमाल ढालने लगी गंध की धारा
वह रूप न था रुपायित सौरभ सारा।"[14]

अपनी ही सौरभ से पागल कवि इन पंक्तियों के द्वारा पुरानी, जानी - पहचानी दुनिया में नवीनता का आगाज करता है। जैसे - वसंत ऋतु पेड़ - पौधे को हरियाली प्रदान कर हृदयग्राह्य बना देती है, तब वह चौतरफा सुगंध बिखरने लगता है। उसी प्रकार परिवर्तन के कर्म- पथ पर मनुष्य भी नित्य नवीन खुशबूओं का संचार करता है। यहाँ 'गंध' शब्द द्वारा अनूठा एवं सटीक ध्राण बिम्ब का प्रयोग हुआ

है।

विचारात्मक बिम्ब - समाज के निर्माण में कवि, गीतकार, साहित्यकार आदि की महत्वपूर्ण भूमिका है। कवि को ' ब्रह्मा' कहा जाता है। जब - जब संसार में अनाकांक्षित, अनपेक्षित विसंगतियां जन्म लेने लगती है, तब - तब कवि 'बहुजन सुखायश' और 'बहुजन हिताय' की कामना करते हुए विसंगतियों पर जमकर प्रहार करता है। शास्त्री जी भी बाज नहीं आते हैं। वह भी राजनीतिक, प्रशासनिक चरित्र की जमकर खींचाई करते हुए, उसके दोहरे चरित्र को सघनतम विचारों के साथ प्रस्तुत करते हैं –

"ऊपर - ऊपर पी जाते हैं, जो पीने वाले हैं
कहते हैं, ऐसे ही जीते हैं, जो जीने वाले हैं।"[15]

ये पंक्तियाँ देश काल की विसंगतियों को यथार्थपरकता के साथ प्रस्तुत करती हैं। यहाँ 'पीने वाले' से जैसे शब्द चित्रों के माध्यम से गीतकार ने सघन वैचारिक बिम्बों को निरुपित किया है।

प्राकृतिक बिम्ब - समग्र छायावाद में बिम्बों का वैशिष्ट्य समाहित है। शास्त्री जी उत्तर छायावाद के कवि हैं, मगर उनका मन अहरह छायावाद के प्रदेश को मुड़-मुड़ कर देखता भर नहीं है, बल्कि उसमें रमता भी है। क्योंकि वहाँ प्रकृति अपनी प्रभुता और मानवीयता के साथ उपस्थित है। वे प्रकृति के मूर्धन्य कवि हैं। उदाहरणनार्थ –

"ऊसर धन धूसर संध्या के छाए वृंदावन पर
नीला चाँद झांकता झुरमुट - झुरमुट से रह - रहकर
फैलाए हैं पंख चकोरी अब भी नभ छूने को।"[16]

वृंदावन के चित्रण द्वारा कवि ने मथुरा छोड़कर द्वारका गए श्री कृष्ण का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। द्वारका जाने के बाद श्री कृष्ण ने वृंदावन की कोई खोज खबर नहीं ली। राधा चकोरी पंक्षी की तरह श्री कृष्ण का कुशल - छेम जानना चाहती है। माँ यशोदा मानो बाँसों के झुरमुट से निकलकर श्री कृष्ण के वात्सल्य रूप का दर्शन करना चाहती है। नीला चाँद, झुरमुट, चकोरी प्रकृति का अत्यंत सघन एवं आकर्षक बिम्ब है। शास्त्री की महान सौंदर्योपासक कवि हैं। उनके सौंदर्य के गर्भ में भी विशिष्ट भारतीय दर्शन समाहित हैं -

"चांद का फूल खिला
ताल में गगन के।"[17]

इन पंक्तियों में नवगीत की आहट सुनाई पड़ती है 'चाँद का फूल' रुपी बिम्ब आधुनिक भारतीय जीवन दर्शन को प्रखरता के साथ प्रस्तुत करता है। इन पंक्तियों में जिंदादिली है, मस्ती भी और गीत कर्म का विशेषता भी। उनकी आधुनिकता में भी प्रकृति की विविधता विद्यमान है। यथा -

"धूप - तरी कुहरी की झील में
जैसे उजली बदली अंबर नील में।"[18]

इन पंक्तियों में प्राकृतिक बिम्ब अनूठे एवं अछूते अंदाज में उपस्थित है। 'धूप-तरी' का 'कुहरी की झील में तिरना', 'धूप–तरी' का 'उजली बदली' और 'कुहरी की झील' का 'नील अंबर' से सादृश्य, प्रकृति के साथ - साथ अनोखा तलस्पर्शी बिम्ब का उदाहरण प्रस्तुत करता है। आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री महान सर्जक एवं उत्कृष्ट कला साधक हैं। ऐसे तो उनकी रचनाओं में अनेक बिम्ब प्रयुक्त हुए हैं - लक्षित एवं उपलक्षित बिम्ब, आदिम बिम्ब, सज्जात्मक बिम्ब, छायात्मक बिम्ब, धनात्मक बिम्ब, उदात्त बिम्ब, कलात्मक बिम्ब, समानुभूति-मूलक बिम्ब इत्यादि।

शास्त्री जी बिम्बधर्मी गीतकार हैं। उनके गीतों में भारतीय सांगीतिक परंपरा की अनुगूंज है, तो शब्दधर्मिता में चित्रात्मकता की रमणीयता। उनके गीतों में भावों का संगुफन है, तो लयों की झंकृति भी है। उनके गीत सांस्कृतिक बोध से अनुप्रमाणित हैं तो युग-बोध से उत्प्रेरित भी। निश्चय ही शास्त्री जी अद्वितीय गीतकार हैं और बिंबों के अप्रतिम गीतकार।

सन्दर्भ सूची :

1. डॉ. रेवती रमण,साध के अनुरूप सृजन, अभिधा प्रकाशन,प्रथम संस्करण 2021, पृष्ठ संख्या– 51.
2. सम्पादकीय, 'उत्तम पुरुष', अभिधा प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, 2011 पृष्ठ संख्या – 155.
3. https ://www.himalini.com.

4. डॉ. रेवती रमण, साध के अनुरुप सृजन, अभिधा प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2021,पृष्ठ संख्या – 196.
5. डॉ. रेवती रमण, काव्य विमर्श : निराला, अभिधा प्रकाशन, प्रथम संस्करण 200 0,पृष्ठ संख्या – 31.
6. सम्पादकीय, 'उत्तम पुरुष', अभिधा प्रकाशन, द्वितीय संस्करण 2011 ,पृष्ठ संख्या – 85.
7. वही,पृष्ठ संख्या – 48.
8. शिप्रा : आधुनिक कवि, तृतीय संस्करण-1957, पृष्ठ संख्य - 50.
9. मेघगीत : आधुनिक कवि, पृष्ठ संख्या – 90.
10. सम्पादित, 'उत्तम पुरुष', अभिधा प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ संख्या – 82.
11. वही, पृष्ठ संख्या – 103.
12. वही,पृष्ठ संख्या - 22.
13. वही, पृष्ठ संख्या – 117.
14. वही, पृष्ठ संख्या – 179.
15. वही, पृष्ठ संख्या - 79.
16. डॉ. रेवती रमण, साध के अनुरुप सृजन, अभिधा प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2021, पृष्ठ संख्या – 106.
17. सम्पादित, 'उत्तम पुरुष', अभिधा प्रकाशन, द्वितीय संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या - 76.
18. वही, पृष्ठ संख्या - 95.

•